:: अध्याय - द्वितीय ::

// राजेन्द्र अवस्थी का साहित्यगत परिचय //

अध्याय : दूसरा :-

// राजेन्द्र अवस्थीजी का साहित्यगत परिचय //

हिन्दी साहित्य में अनेक साहित्यकार हैं, उसी तरह राजेन्द्र अवस्थीजी भी साहित्यकार हैं। उन्हें अपने बचपन से ही लिखने की आदत है। उन्होंने स्कूल जीवन में ही कविता लिखना शुरू किया, लेकिन ज्यादा कविताएँ नहीं लिख पाये। फिर भी शुरूआत कविता लिखने से ही उनके लेखन का आरंभ हुआ।

राजेन्द्र अवस्थीजी विविध मुखी सम्पन्न साहित्यकार हैं। आरंभ से उन्हें पत्रकारिता में उल्लेखनिय यश प्राप्त हुआ है।

" कृतित्व के माध्यम से व्यक्तित्व के सुस्थिकरण का एक प्रयास है। १ व्यक्तित्व और कृतित्व मनुष्य की आत्मा है। कृतित्व-व्यक्तित्व का का शाश्वत अंश है। इतिहास भी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके व्यक्तित्व से नहीं, उसके कृतित्व से ही करता है।

वस्तुत: अपने बहुव्यस्त पत्रकार जीवन के साथ - साथ अवस्थीजी ने हिन्दी साहित्य की अभिवृध्दि की दिशा में प्रशंसनीय योगदान किया है। किया है। राजेन्द्र अवस्थीजी मूलत: कवि थे और उन्होंने स्वंय एक स्थल पर संकेत किया है कि -

" मेरी हालत किसी खानाबदोश की तरह रही थी - यानी हर समय होलडाल तैयार रखना और कवि सम्मेलनों के लिये खाना होना। कवि सम्मेलनों की उस समय खासी बाद थी। " इसी कारण शीघ्र ही उनकी रुचि कहानी एवं उपन्यास की ओर भी गयी और उनके कथनानुसार " आज की दुनिया में कविता से सिरर्थक और बेमानी और कोई चीज नहीं हो सकती"२

अतएव राजेन्द्र अवस्थीजीने अन्य विविध साहित्य रूपों की समृध्दि की ओर आपना ध्यान आकृष्ट किया है। उन्होंने विविध विषयक रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। मैं उनकी रचनाओं का उल्लेख निम्मानुसार कर रहा हूँ।

// सम्पादन कार्य //

सम्पादन का आरंभ राजेन्द्र अवस्थीजीने नागपुर से किया है। "नवभारत " द्वारा ही अन्होंने पत्रकारिता का श्रीगणेश किया और उनके साथ ही अवस्थीजी को " नवभारत " के संचालक ने " रविवासरीय संस्करण " के साहित्य पूर्ति अंक का सम्पादन भार सम्भालने के लिये कहा। " उन्होंने यह कार्य पूर्ण मनोमन के साथ किया। प्रतिष्ठित लेखकों एंव कवियों की रचनाएँ " नवभारत " के " रविवासरीय " संस्करण साहित्यपूर्ति अंकमें प्रकाशित करने का कार्य किया है। राजेन्द्र अवस्थीजी का सम्पादन कार्य सुयोग्य है। इसी कारण इस साप्ताहिक संस्करण को लोकप्रियता बढ़ गयी और सर्व सामान्य जनता ने इस पत्र को अधिकाधिक अपनाया।

अवस्थीजी अधिक समयतक " नवभारत " में न रह सके। वे " टाईम्स ऑफ इन्डिया प्रेस " बम्बई से प्रकाशित होनेवाली मासिक पत्रिका "सारिका " के सम्पादकिय विभाग में नियुक्त हुए। उस के सुयोग्य सम्पादन के कारण यह पत्रिका प्रथम श्रेणी की उत्कृष्ठ मासिक पत्रिका प्रसिध्द हुयी। इस के पश्चात् राजेन्द्र अवस्थीजी को " हिन्दुस्तान टाईम्स प्रेस " दिल्ली " से प्रकाशित होनेवाली " नन्दन " नामक बालोपयोगी मासिक पत्रिका का भार सँभालने के लिए आमंत्रित किया गया और उन्होंने इस मासिक पत्रिका को उँचे शिखर पर पहुँचने का कार्य किया है। उस के बाद " कांदबिनी " नामक मासिक पत्रिका के सम्पादन का भार संभालना पडा है।

अवस्थीजी ने अपने सम्पादन युग में सम्पादन कार्य महत्वपूर्ण निभाया और सँभाला है।

राजेन्द्र अवस्थीजी की यह विशेषता है कि एक पत्रकार के रूप में उन्होंने अपनी यात्रा नागपुर से आरंभ की तब उन्होंने समाचार पत्रों द्वारा आदिवासियों के जीवन सम्बन्धित लेख प्रकाशित किये हैं। उन्होंने जो रचनाएँ की हैं, वे सारी रचनाएँ कमरे में बैठकर नहीं की हैं। उन्होंने अस-पास के गौडो [जमात] और आदिवासियों के बीच रहकर, घूमकर उनके जीवन- संस्कृति का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है।

सुरेश निरव कहते हैं - " राजेन्द्र अवस्थीजी एक मात्र ऐसे लेखक है, जिन्होंने उपेक्षित जनता की अपनी लेखनी का माध्यम बनाया है। "४ "फणीश्वर नाथ रेणु " " नागार्जुन " आदि लेखकों की रचनाएँ पढने के बाद ऐसा लगता है कि गाँव के भीतर भी यदि गाँव से भी बेहतर कोई इकाई है, वहाँ तक कोई लेखक पहुँचाही नहीं है, पहुँचा है तो एकमात्र लेखक सिर्फ राजेन्द्र अवस्थीजी"।

राजेन्द्र अवस्थीजी की जिन्दगी के बहुत से पहलू हैं। परंतू ये सब पहलू रचनाधर्मिता के स्तर पर हैं। देहात के भीतर का चित्रण करनेवाला लेखक राजेन्द्र अवस्थीजी का महानगरीय बोध जीवन और सभ्यता के साथ गहरायी से मिल जाता है।

अवस्थीजी का उपन्यास " उतरते ज्वार की सीपियाँ" में बम्बई जैसे विशाल महानगरोंका जनमानस ,वहाँ की बड़ी- बड़ी सडकों, जंगलो आदि का वर्णन अवस्थीजी ने इस उपन्यास में किया है।

इस उपन्यास का नायक " गणपत " है जो ऐसा व्यक्ति है, वह दलाल है कि - जो विशुध्द रूप से लडकियाँ सप्लाई करने का धंदा करता है, लेकिन वह खुद को पापी नहीं समझता और कहता है कि - मैं सप्लाई नहीं करता तो और कोई सप्लाई कर देगा। मनुष्यत: की परख इस में हो सकती है। " उतरते ज्वार की सीपियाँ " का नायक " गणपत " एक विलक्षण चरित्र है, उसका वर्णन अवस्थीजीने अच्छी तरह से किया है। इसी के साथ - साथ इस में उन व्यक्तियों का भी चित्रण किया है, जो लावारिस लाशों को स्मशान घाट से ले आते है और उसके नामपर चंदा मांगकर अपनी जिन्दगी जीते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में अवस्थीजी ने बम्बई जैसे महानगरों का गहराई से अध्ययन कर के सचाई का वर्णन अपने कृतित्व में किया है।

अवस्थीजी का और एक उपन्यास है " बीमार शहर " इसी में भ्रष्ट समाज५ व्यवस्था का चित्रण इस उपन्यास में किया हैं।

" तुम विवाह जैसी संस्था से बंधे हुए कुत्ते हो " । ५

इस एकमात्र वाक्य से इस देश की सड़ी हुई समाज व्यवस्था को देखा जा सकता है।

राजेन्द्र अवस्थीजी एक विवादस्पद व्यक्ति हैं। वे " अवस्थीजी जितने व्यक्ति के रूप में विवादस्पद हैं , उतने ही विवाद उनको लेकर साहित्य जगत में भी हैं। " ६

उनकी रचना - धर्मिताएँ कुछ सीमाओं के भीतर बंधी हुई हैं।

उपन्यासकार राजेन्द्र अवस्थी :-

राजेन्द्र अवस्थीजी के कृतित्व का परिचय देते हुए मेरी राय के अनुसार वे एक आत्मकद उपन्यासकार हैं।

उन्होंने जन-जीवन से कटे, निश्चल, सरल और भोले आदिवासियों की समाज- व्यवस्था और उनके जीवन का चित्र लेकर वे उपन्यास क्षेत्र में आये है। उपन्यास के पहले वे कवि और कहानी लेखक के रूप में अपना स्थान पक्का कर चुके हैं आदिवासी जन-जीवन पर लेखनी चलाने का साहस बहुत कम उपन्यासकारोंने किया है। परन्तू राजेन्द्र अवस्थीजीने आदिवासियों को निकट से देखा है, समझा है और उनको अपने उपन्यास का विषय बनाया है।

उन्होंने श्री वेरियर आल्विन के साथ आदिवासियों की निकटता प्राप्त की और उन्होंने आदिवासियों के विश्वास और भोलेचरियों की प्रेरणासे ही पहला उपन्यास लिखा है, जिसका नाम है -

" सूरज किरण की छांव "

अवस्थीजी ने सात-आठ माह विशेश रूप से बस्तर के आदिवासियों के साथ घूमकर उनके जन-जीवन को अपनाया है। आदिवासियों का दु:ख, दर्द संस्कृति निकट से देखकर उन्होंने " जंगल के फूल " इस उपन्यास की रचना की है।

अवस्थीजी ने उपन्यास के व्यक्तिगत जीवन के किशोरकाल से अनुभवों के साथ ही ग्राम राजनिति का वर्णन अपने " जाने कितनी आँखें " नामक उपन्यास में और उसके साथ - साथ एक कलाकार के जीवन की विविधता का चित्रण " बहता हुआ पानी " इस उपन्यास में किया है।
फिल्म जीवन की सही तस्वीर को वहीं लेखन चर्या का विषय बनाया है।

उनके बारे में सुरेश यादव कहते है, " राजेन्द्र अवस्थीजी का साहित्य आनेवाली दुनिया की पहचान का साहित्य नहीं होगा बल्कि शायद उसका एक अंग भी। उसी साहित्य का टुकडा आज भी जनवादी चेतना के साथ जुड़कर टूटे और पराजित लोगों के बीच खड़ा हुआ उन्हें विद्रोह के लिए मजबूर करता है। " ७

राजेन्द्र अवस्थीजी एक विद्रोहीन्मुखी लेखक हैं। राजेन्द्र अवस्थीजी के प्रकाशित उपन्यास इस प्रकार हैं।

प्रकाशित उपन्यास
==========

१]"सूरज किरण की छाँव " यह राजेन्द्र अवस्थीजी का पहला उपन्यास है, जो सन १९६० में प्रकाशित हुआ।

२] " जंगल के फूल " यह अवस्थीजी का दूसरा उपन्यास है जो सन १९६० में प्रकाशित हुआ है।

३] जाने कितनी आँखे।

४] बहता हुआ पानी।

५] उतरते ज्वार की सीपियाँ।

६] बीमार शहर - उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत।

७] अकेली आवाज।

८] मछली बाजार, आदि

इनमें से " जंगल के फुल " नामक उपन्यास के चार संस्करण और " बीमार शहर " नामक उपन्यास के तीन संस्करण प्रकाशित हुए हैं। "सूरज

किरण की छाँव " और " उतरते ज्वार की सीपियाँ नामक उपन्यासों के -दो दो संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

इस प्रकार राजेन्द्र अवस्थीजी का उपन्यास साहित्य महत्वपूर्ण है। उनके उपन्यासों का अध्ययन संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत है।

१] सूरज किरण की छाँव :- इस उपन्यास में एक आदिवासी लड़की की वेदना पूर्ण कहानी है। बंजारी का चरित्र उपन्यास कामहत्वपूर्ण और प्रमुख चरित्र है।

२] जंगल के फूल :"

प्रस्तुत उपन्यास में आदिवासी जन-जीवन को निकट से भोगने और उसे यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस में "सदा से उपेक्षित बस्तर " आदिवासीयों का चित्रण किया है।

३] जाने कितनी आँखें :-

बुंदेलखंड के जन-जीवन पर सर्वप्रथम " जाने कितनी आँखें " को रखा जाता है। उपन्यास की कथा-वस्तु अँचल विशेष से संपृक्त है।

४] बहता हुआ पानी :-

एक कलाकार की जिन्दगी का चित्रण इसमें अवस्थीजी ने किया है।

५] उतरेत ज्वार की सीपियाँ :-

स्वंय लेखक ने अपने फिल्म जीवन के बहु अनुभवों को इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

६] बीमार शहर :-

इस में शहर की यांत्रिकता और बीमार व्यवस्था के चित्र लेखक ने सबके सामने प्रस्तुत किया है।

७] अकेली अवाज :-

७] अकेली आवाज :-

राजेन्द्र अवस्थीजी द्वारा लिखित " अकेली आवाज " एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है।

८] मछली बाजार :-

प्रस्तुत उपन्यास भी राजेन्द्र अवस्थीजी ने अपने अनुभव के साथ लिखा है।

राजेन्द्र अवस्थी की कथा यात्रा

बीसवीं शती का प्रारंभ हिन्दी साहित्य क्रान्ति का युग रहा है। इस युग में नये लेखकों का उल्लेखनीय स्थान है, उसमें राजेन्द्र अवस्थीजी भी अग्रणी हैं। उन्होंने भी कहानियों का स्वरूप, गठन, वस्तु एंव शिल्प को नये परिवेश में सजाया और सँवारा है। कहानी की उन्मेष की दिशा में अवस्थीजी ने, नयापन, दिया है और साथ-साथ प्रांजलता और पारदर्शिता एवं संवेदनीय अनुभूति आदि दी है। रीता बैनर्जी उनके बारे में कहती हैं -

" राजेन्द्र अवस्थीजी का कहानियों में क्षणिक आवेग नहीं है," ८ एक लम्बा सफर है। वह सतत चिंतनशील है। यह उनका चिंतन का परिणाम है। इस चिंतन में भड़क मन की गहरी संवेदना का अद्‌भुत मिश्रण है। उन्होंने परम्परा एंव नवीनता दोनों का समन्वय कर कहानियों में अपूर्व कहानी कौशल्य का परिचय कर दिया है।

राजेन्द्र अवस्थीजी ने नई कहानी में उत्तराधिकार में जो कुछ पाया उसे उन्होंने बिना, सोचे, समझे ग्रहण नहीं किया। प्राप्त मूल्यों में से जिसकी संगति, उसकी अंतरिक प्रक्रिया की प्रकृति को उन्होंने अपने जीवन बोध के साथ बैठा दिया है और ग्रहण किया है। हर लेखक ने अपने अनुभूत जीवन की निरन्तरता से जीवन खण्डों को उठाकार अभिव्यक्त कर दिया है।

प्रारंभ से ही अवस्थीजी ने कहानियों का अध्ययन सरस और मनोरंजक कर दिया है। उन्होंने कहानी में तथ्यों को प्रकाशित किया है।

उनका हस्ताक्षर स्वातंत्र्योत्तर लेखको में प्रमुख है। उनकी आरम्भिक रचनाओं में विशेष रूप से कहानियों में आँचलिकता का रंग कुछ गहरा है।

प्रारम्भ में अवस्थीजी ने ग्रामीण तथा आदिवासी प्रधान अंचलों को कथा का आधार बनाया है, किन्तु परवर्ती कहानियों मे महानगर के किसी अंचल विशेष को उन्होंने चित्रित किया है। उन्होंने आँचलिकता की परिभाषा को विस्तृत धरातल पर प्रतिष्ठित किया है।

आँचलिक वही है " जो केवल ग्रामीण जीवन पर आधारित हो और वहाँ की संस्कृति का चित्रण करें " [९]

आँचलिक कथाओं के अतिरिक्त अन्य समस्याओं, विचारधाराओं, विसंगतियों तथा विद्रूपताओं के साथ - साथ विभिन्न शैली और कथ्य से कहानियों का सृजन किया है।

नई कहानी और साठोत्तरी कहानी लेखको में राजेन्द्र अवस्थीजी अग्रणी कथाकार हैं। उन्होंने सहजता के माध्यम से कलात्मक सौंदर्य को अभिव्यक्ति दी हैं। अधिकांश कहानियाँ हिन्दी साहित्य के ऊँचे शिखर पर पहुँची है। कथनों में शिल्प की साधारणता और उत्कृष्टता दी है। विचारों और संवेदनाओं का स्तर कहीं भी सामान्य नहीं दिखाई देता। संवेदना अत्यंत -हृदयग्राही है और विचारधारा दिल और दिमाग को झकझोरनेवाली है। उनकी कथाओं में नवीनता का अपूर्व स्वर है। प्राय : अवस्थीजी के सभी कथा संग्रह विविधता से भरे हुए है।

राजेन्द्र अवस्थी के कहानी संग्रह :-

वस्तुत: राजेन्द्र अवस्थीजी ने बहुसंख्यक कहानियों की रचना भी की है और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

अब तक अवस्थीजी के निम्नलिखित कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है, " सिर्फ मैं उन कहानी संग्रहोंका नामोल्लेख करता हूँ।

१] दो जोडी आँखे।

२] मेरी प्रिय कहानियाँ।

३] एक पिघलती हुई मछली।

४] लमतेना।

५] तलाश।

६] प्रतीक्षा।

७] एक औरत से इंटरव्यू।

राजेन्द्र अवस्थीजी का साहित्यगत परिचय देते हुए प्रिय साहित्य रचना निम्नानुसार है -

बालसाहित्य :-

अवस्थीजी का साहित्यगत परिचय देते हुए उन्होंने बालसाहित्य का भी निर्माण किया है। उनकी लेखनी ने बाल साहित्य की समृध्दि की दिशा में सराहनीय योग प्रदान किया और अब तक उनकी निम्नलिखित बालापयोगी कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

राजेन्द्र अवस्थीजी की बालसाहित्य कृतियाँ — निम्नानुसार हैं -

१] नील झील।

२] बाँस के फूल।

३] छोटी बड़ी लहर। आदि.।

राजेन्द्र अवस्थीजी की अन्य साहित्य कृतियाँ :-

अवस्थीजो का साहित्यगत परिचय देत हुए उन्होंने उपन्यास एंव कहानी - साहित्य समृध्दि के साथ - साथ अवस्थोजी ने विविध विषयक रचनाएँ भी प्रस्तुत है। इस लघु प्रबन्ध की दृष्टि से उनकी निम्नलिखित कृतियाँ उल्लेखनिय हैं। उनकी निम्नलिखित कृयिाँ नीचे दी गयी हैं --

१] शहर से दूर ।

२] शैलानी की डायरी।

३] मध्य - प्रदेश ।

४] काल चिन्तन।

इन का संक्षेप में उल्लेख इस प्रकार है --

शहर से दूर :-

प्रस्तुत कृति में आदिवासियों के जीवन की झलक राजेन्द्र अवस्थीजी ने अंकित की है।

शैलानी की डायरी :-

राजेन्द्र अवस्थीजी ने स्वंय की गयी यात्रा का वृतांत चित्रम " शैलानी की डायरी " में चित्रित किया है।

मध्य प्रदेश :-

" मध्य प्रदेश " नामक पुस्तक में लेखक ने मध्य प्रदेश का संक्षिप्त पर सारगर्भित परिचय दिया है।

कालचिंतन :-

" कालचिंतन " को संस्मरण साहित्य के अन्तर्गत स्थान प्रदान किया गया है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि " कादंबिनी " मासिक पत्रिका के " कालचिंन्तक " नामक स्तंभ के अन्तर्गत राजेन्द्र अवस्थी जी ने समय समय पर जो विचार व्यक्त किए है " उनका स्पष्टीकरण " कालचिन्तन " नामक पुस्तक में किया है। उसे लेखों का अनुठा संकलन भी कहा जाता है।

सम्पादित कृतियाँ :-

राजेन्द्र अवस्थीजी की निम्नलिखीत सम्पादित कृतियाँ भी उल्लेखनीय है।

१] श्रेष्ठ आँचलिक कहानियाँ।

२] श्रेष्ठ प्रेम कहानियाँ

३] श्रेष्ठ भारतीय कहानियाँ, आदि।

वस्तुत: अवस्थीजी की साहित्यीक कृतियों के लिए अवस्थीजी को भारत सरकार और विभिन्न राज्य - सरकारों द्वारा पुरस्कृत किया है। इनकी साहित्य सेवा को देखकर उन्हें विभिन्न सरकारी संस्थाओं का परामर्शदाता नियुक्त किया गया है।

राजेन्द्र अवस्थीजी को कई बार विदेश यात्रा का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

" उन्होंने - सम्पूर्ण योरोप, इंग्लैंड ,सभी स्केंडेनेवियन देश, दक्षिण पूर्व एशिया के समस्त देश, रूमानिया, तंजानिया, जंजीबार, सीसिल्स, मारिशस, एंव नेपाल आदि की यात्राएँ की हैं। [१०]

इस प्रकार राजेन्द्र अवस्थीजी का साहित्यीक परिचय देते हुएं उनका साहित्यिक कृतित्व निर्विवाद रूप से सराहनीय है।

इसप्रकार मैंने इस लघु-कृति के द्वारा राजेन्द्र अवस्थीजी के साहित्य का कृतिगत परिचय कर देने की कोशिश की है।

****

निष्कर्ष :-

१] राजेन्द्र अवस्थीजी एक सफल कवि, कथाकार उपन्यासकार दार्शनिक, दोस्त, भाई , और सब कुछ हैं।

२] उनका साहित्यिक किसी भी प्रकार बनावट नहीं है। उनके कृतित्व में जो स्पष्ट किया है वह सभी यथार्थ है। उन्होंने अपने अनुभव के साथ सही लेखन किया है।

३] उनकी यात्राएँ जोखिम - भरी और डायरियाँ रसपूर्ण है। शैली का विकास भी इसमें सफल है।

४] राजेन्द्र अवस्थीजी की रचनाओं में प्रस्तुत मनोवैज्ञानिक समस्याएँ आज के मानव की महत्वपूर्ण समस्याएँ है। वे इन समस्याओं के चित्राकंन में सफल हुए हैं। उन्होंने भावी समाज की उन्नति के लिए अपने कृतित्व के

माध्यम से मार्ग सफल किया है, और नये लेखन की दिशा में भावी पीढ़ियों का पथ भी आलोकित किया है।

****

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

१]	राजेन्द्र अवस्थी, इक्कीसवीं सदी की दृष्टि	सुरेश नीरव	प्राक्कथन से प्राप्त
२]	मेरी प्रिय कहानियाँ	राजेन्द्र अवस्थी	पृ. ५
३]	राजेन्द्र अवस्थी का	श्रीमती नन्दिती मिश्र	पृ. ९
४]	राजेन्द्र अवस्थी इक्कीसवीं सदी की दृष्टि	सुरेश नीरव	पृ. १४
५]	-- वही --		पृ. १६
६]	-- वही --		पृ. १७
७]	"- वही --		पृ. १८
८]	-- वही --		पृ. २४
९]	-- वही --		पृ. २५
१०]	राजेन्द्र अवस्थी का उपन्यास	श्रीमती नन्दिनी मिश्र	पृ. १२

****